क्या दीपशिखा बुझ गई?

(दीपा मुरम् के बलात्कार और मौत की सच्चाई)

23 अगस्त 1996 को पटना के अखबार में खबर छपी। "बलात्कार की शिकार प्रसव के बाद मरी।" इस छोटी सी खबर के पीछे लम्बी कहानी है। विश्वासघात की कहानी। न्याय के लिए संघर्ष की कहानी। हिम्मत और साथ ही दमन की कहानी।

दीपशिखा जली

दीपा, बिहार राज्य के जमुई जिले के एक गांव की आदिवासी लड़की थी। उसका परिवार ग़रीब लेकिन शिक्षित था। जमुई में साक्षरता अभियान चला। प्रचार के लिए सांस्कृतिक दल बना। दीपा उसकी खास कलाकार थी। जोश और हुनर से भरपूर। वह कार्यक्रमों में हिस्सा लेने यहां-वहां जाती रहती थी। साथ होते थे डी.आर.डी.ए. के निदेशक के.के. सिंह और बी.डी.ओ. रविन्दर सिंह। वे दीपा को बेटी कहते। दीपा उन्हें आदर देती। उनका विश्वास करती। 27 नवम्बर 1995 को कार्यक्रम के बाद के.के. सिंह ने दीपा को बी.डी.ओ. के घर ठहराया। वहां बी.डी.ओ. की बहन और पूरा परिवार था। दीपा अपना घर समझ कर रात वहीं रुकी।

विश्वास की हत्या

अगले दिन भी कार्यक्रम के बाद दीपा वहीं आई। उसके पेट में दर्द था। खाने के बाद वह नींद की गोली लेकर सो गई। गहरी नींद से आंख खुली तो दीपा ने देखा बी.डी.ओ. उसके साथ बलात्कार कर रहा था। उसके चीखने से पहले ही मुंह बंद कर दिया गया। दीपा रोती रही। उसने सिर्फ़ यही पूछा "क्या इसके लिए ही मुझे बेटी कहकर यहां लाए थे?"

घर जाकर मां को सब कुछ बताया। मां को विश्वास नहीं हुआ। शर्म और मानसिक आघात की वज़ह से दीपा ने इस घटना की रपट नहीं लिखाई। मन में गर्भ के ठहरने का डर भी समाया हुआ था। फरवरी 1996 को महिला डाक्टर को दिखलाया। दीपा को गर्भ ठहर गया था। अब तो दो ही रास्ते थे। या तो गर्भपात करा ले या दोषी को सज़ा दिलाए।

एक लम्बी लड़ाई

दीपा ने अधिकारियों को इस बारे में पत्र लिखे। किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। दीपा ने एफ.आई.आर. दर्ज कराने का फ़ैसला किया। दीपा को मालूम था स्थानीय थाने में उसकी कोई सुनवाई नहीं होगी। वह हिम्मत करके पटना पहुंची। मुख्य मंत्री से मिलने की कोशिश की। बहुत मुश्किलों व इन्तजार के बाद मुख्य मंत्री से मिल पाई। उसने लिखित शिकायत की अर्जी उन्हें दी। वहां शिक्षा मंत्री मौजूद थे। उन्होंने दीपा को चरित्रहीन साबित करने की कोशिश की। औरत के ख़िलाफ यह भी पुरुषसत्ता का एक हथियार है।

मुख्यमंत्री ने जांच का आदेश दिया। वह पुलिस संरक्षण में जमुई लौटी। उसकी डाक्टरी जांच हुई तथा गर्भ साबित हुआ। उससे पूछताछ हुई लेकिन नतीजा कुछ न निकला। उसके बाद शुरू हुआ एक लम्बा संघर्ष। जो दीपा की मौत तक चलता रहा। दीपा ने मंत्रियों, अधिकारियों को दर्ज़नों पत्र लिखे। पर कोई मदद न मिली। इसके बावजूद दीपा ने तय किया कि वह बच्चे को जन्म देगी। उसने अपनी डायरी में एक जगह लिखा था–

"इस बच्चे को क्यों मारूं? यह तो निर्दोष है। जिसे मरना चाहिए वह तो बी.डी.ओ. है।"

जचगी का समय आया। पास के अस्पताल से कोई मदद न मिली। बच्चा घर में हो गया लेकिन आंवल न निकली। बड़ी मुश्किलों से गाड़ी करके उसे प्राइवेट डाक्टर के पास ले गए। डाक्टर ने बग़ैर जांच किए दो सुइयां लगाने को कह दिया। सुइयां लगीं और दीपा आखिरी बार बोली "मां, खतम"

और दीपा खतम हो गई।

मां का कहना है, दीपा की मौत में डाक्टर का हाथ था। परिवार ने खूब भागदौड़ की। तीन दिन तक लाश घर में रखी पर पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। हार कर दीपा को दफ़ना दिया गया। मिट्टी और पत्थरों के ढेर के नीचे दीपा सो रही है, लेकिन अशान्त। उसे इन्साफ़ नहीं मिला।

दीपशिखा बुझी

दीपा एक खास लड़की थी। जिन्दगी से भरपूर। वह गाना गाती, कविताएं लिखती, खेलों में हिस्सा लेती। वह बहुत कुछ करना चाहती थी। कुछ बनना चाहती थी। शायद एक दिन वो यह सब कर पाती। शायद एक दिन वो आदिवासी लड़कियों के लिए दीपशिखा बनती। लेकिन सब ख़त्म कर दिया एक पुरुष ने जिसे सहारा दिया एक व्यवस्था ने। दीपा अपने पीछे छोड़ गई है अपनी कविताएं, कहानियां, डायरियों में लिखे विचार। लेकिन सबसे बड़ी चीज़ छोड़ गई है–कुछ जलते हुए सवाल। उन सवालों के जवाब ढूंढने की हम सबकी लड़ाई। क्योंकि दीपा की कहानी, उसके सवाल हर औरत के हैं।

– क्या अकेली लड़की के लिए सुरक्षा नहीं है?
– क्या सरकारी कामों से जुड़ी औरतें असुरक्षित हैं?
– क्या पुलिस और न्याय व्यवस्था औरत के ख़िलाफ़ हैं?
– क्या अधिकारी, मंत्री, शासन व्यवस्था पितृसत्तात्मक हैं?
– क्या समाज, आदिवासी और उस पर जागरुक औरत को आगे बढ़ने नहीं देगा?
– क्या आधी जनता को न्याय नहीं मिलेगा? □

वीणा शिवपुरी

(स्वतंत्र जांच दल की रपट पर आधारित)